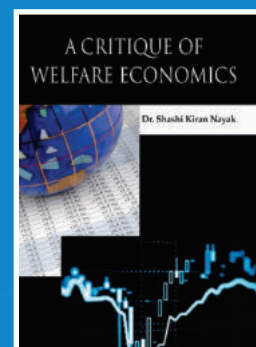
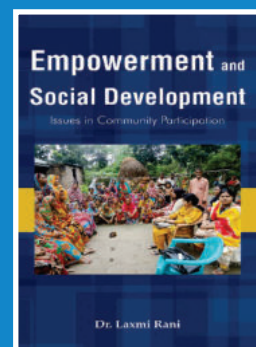
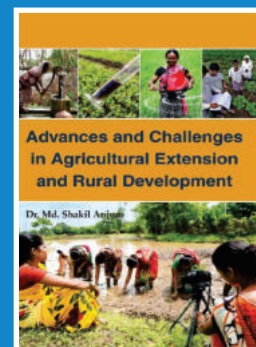
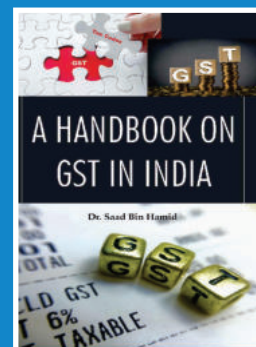
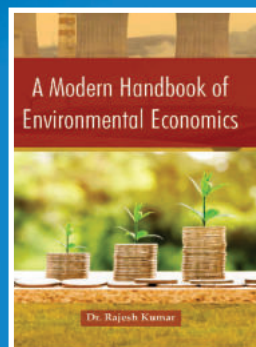
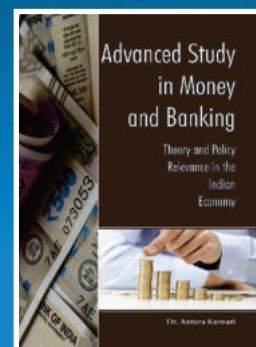
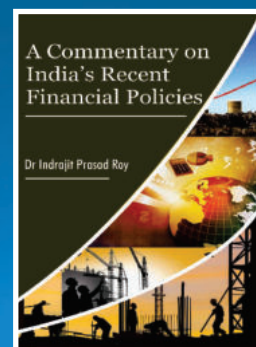
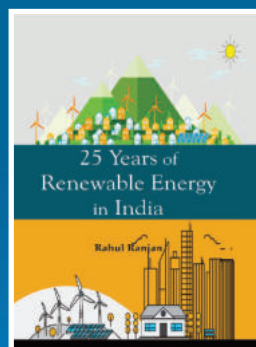


ISSN 0975-119X

OUR PUBLICATIONS



448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 11 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2019 मूल्य ₹1500

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred
Hindi Language Journal



दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

रीडर, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

दृष्टिकोण प्रकाशन

WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045

वर्ष : 11 अंक : 6 □ नवम्बर-दिसम्बर, 2019

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

प्रो. लॉरेंस ओएडिजी
वेगेनिंग विश्वविद्यालय, नीदरलैंड
डॉ. मार्टिन ग्रिन्डले
नॉटिंगम विश्वविद्यालय, लंदन
डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबोरो, ओन्टारियो
डॉ. दया शंकर तिवारी
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ. सुरज नन्दन प्रसाद
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया
डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर
डॉ. सी.पी. शर्मा
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग
डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची
डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका
डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना
डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा
डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091

फोन : 011-22753916

e-mail : editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

मूल्य: ₹ 1500.00

मुद्रक एवं प्रकाशक निर्मल कुमार सिंह द्वारा WZ-724, पालम गांव, नई दिल्ली-110045 से प्रकाशित तथा ट्राइडेंट इन्टरप्राइजेज, डी-204, सेक्टर-10, नोएडा, जी.बी. नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

लघु उद्योग के लिए अनुकूल परिवेश को प्रोत्साहन

भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु उद्यमों का सदैव एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। चाहे वह उत्पादन, रोजगार या निर्यात, किसी भी रूप में जुड़ा क्यों न हो। इसके अतिरिक्त लघु उद्योग समानता और विकेंद्रीकरण के साथ विकास के भी वाहक हैं। इसलिए आर्थिक नीति को लघु उद्योगों के संवर्धन और संरक्षण पर उचित रूप से लक्ष्य किया जाना चाहिए। हालांकि दो दशकों से अधिक समय से यह क्षेत्र एक गंभीर संकट से गुजर रहा है। बड़ी संख्या में लघु उद्योगों की समाप्ति न केवल नौकरियों के सृजन, बल्कि उनके एवं अर्थव्यवस्था के विकास में अवरोध उत्पन्न कर रही है।

उदारीकरण और भूमंडलीकरण का प्रभाव: स्वतंत्रता के बाद देश की औद्योगिक नीति ने बड़े पैमाने पर निजी उद्योगों के विकास पर रोक लगाई। उस दौर की औद्योगिक नीति लाइसेंस और कोटा राज पर्याय बन गयी थी। मौजूदा उद्योगों ने तो इस आर्थिक नीति के दौर में अपना अस्तित्व बरकरार रखने के कला सीख ली, लेकिन नए उद्यमियों के लिए पनपना कठिन रहा।

जहां तक लघु उद्योगों का संबंध है, तत्कालीन नीति ने एसएसआई को उपभोक्ता वस्तुओं के क्षेत्र में काम करने की अनुमति दी और कई वस्तुओं को एसएसआई के लिए आरक्षित कर दिया गया। 1991 में नई आर्थिक नीतियों के पदार्पण से पूर्व 812 वस्तुओं के उत्पादन की जिम्मेदारी केवल लघु उद्योगों की थी। नई आर्थिक नीति (एनईपी) ने आरक्षण की इस नीति को कुचल दिया। इसी प्रकार लघु उद्योगों को सरकारी खरीद में वरीयता दी जाती थी, कीमतों और खरीद, दोनों के मामले में। धीरे-धीरे प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के नाम पर एसएसआई के लिए रियायतें समाप्त कर दी गयीं। यह कहा गया कि एसएसआई को आरक्षण देने से प्रौद्योगिकी का विकास बाधित होता है और प्रतियोगिता की भावना दम तोड़ देती है। यह भी कहा गया कि संरक्षण देने से अक्षमताएं उत्पन्न होती हैं और देश अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं कर पाता है। यह तर्क दिया गया कि अगर हम लघु उद्योगों सहित घरेलू उद्योग को संरक्षण देना जारी रखेंगे तो विदेशी निवेशकों को निराश करेंगे। साथ ही उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प प्राप्त करने का मौका नहीं मिलेगा। एनईपी के तर्कों ने रोजगार, विकेंद्रीकरण और ऐसी समानता की वकालत करने वाले पक्ष पर विजय हासिल कर ली, जो एसएसआई को रियायत देने की बात करती थी। भूमंडलीकरण के युग में मुक्त आयात नीति ने हमें बड़ी संख्या में उत्पाद और कदाचित प्रौद्योगिकी हासिल करने में तो मदद की, लेकिन लाखों छोटे उद्यमों की तालाबंदी की कीमत पर, जो विश्व के दूसरे देशों से भयंकर प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं कर सके। हालांकि ऑटोमोबाइल जैसे कुछ क्षेत्रों में सहायक लघु स्तरीय इकाइयों में कुछ वृद्धि देखी गयी लेकिन सामान्य रूप से लघु उद्योगों पर बहुत बुरा असर हुआ, खासतौर से चीन से होने वाले आयात के कारण। खिलौने, बिजली के उपकरण, मोबाइल, कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स उपसाधनों, प्रोजेक्ट माल, बिजली संयंत्रों आदि के भारी आयात के कारण देश पर विदेशी मुद्रा भुगतान का भारी बोझ आया, साथ ही हमारे उद्योग और व्यापार नष्ट हो गए जिससे बड़े पैमाने पर बेरोजगारी हुई।

मेक इन इंडिया को कैसे बढ़ावा दें: यद्यपि, चीन द्वारा डंपिंग और भारत के लघु उद्योगों पर उसके असर के विषय में कोई संदेह नहीं है, फिर भी यह समझना महत्वपूर्ण है कि चीनी सरकार अपने देश में उद्योग और उद्यमिता के विकास के लिए अनुकूल माहौल प्रदान करती है। इसी कारण चीन विश्व का विनिर्माण केंद्र बन गया है। भारत में ऐसी कई समस्याएं हैं जिनके कारण लघु उद्योगों का विकास प्रभावित होता है। इनमें महंगी बिजली, पुराना श्रम कानून, जटिल कर प्रणाली, करों की उच्च दर, वित्त पोषण की समस्याएं, बुनियादी ढांचे की कमियां, उद्यम लगाने को हतोत्साहित करने वाले कानून, इंस्पेक्टर राज और विकृत पर्यावरण कानून शामिल हैं। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि लघु उद्योगों को न केवल आयात संबंधी प्रतिस्पर्धा झेलनी पड़ती है, बल्कि उद्योग शुरू करने से लेकर अंतिम उत्पाद को मार्किट तक पहुंचाने में भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

अलग श्रम कानूनों की जरूरत: श्रम की सुरक्षा और कल्याण के महत्व से कोई इंकार नहीं करता। हालांकि अनुचित तरीके से काम पर रखने और निकालने की नीति अच्छी नहीं है और हमें श्रमिकों के हितों की रक्षा करनी चाहिए लेकिन बड़े और लघु उद्यमों के लिए एक ही कानून का औचित्य नहीं है। परिदृश्य अब बदल गया है और जटिल श्रम कानूनों के कारण लघु उद्यमों ने नियमित श्रमिकों की भर्ती के बजाय अनुबंध पर कामगारों को रखना शुरू कर दिया है। बिचौलियों द्वारा ठेके पर काम करने वालों का शोषण किया जाता है जिससे उद्यमियों एवं श्रमिकों के बीच का संबंध समाप्त होता है और दोनों, उद्यमियों और श्रमिकों का नुकसान होता है। इस समस्या को देखते हुए, दूसरे श्रम आयोग ने लघु उद्यमों के लिए अलग कानून बनाने की सिफारिश की थी। श्रमिक संगठनों ने भी ऐसी पहल का समर्थन किया था। कुछ समय पहले अति लघु, लघु एवं मध्यम उद्योग विधेयक तैयार किया गया था। हालांकि लघु उद्यमों के लिए अलग श्रम कानूनों की अब भी आवश्यकता है। वित्त बैंक और अन्य वित्तीय संस्थानों का मानना है कि लघु उद्यमों को उधार देना जोखिम भरा काम है। इस सोच में कोई सच्चाई नहीं है। खासकर यह देखते हुए बड़े कर्ज के बदले बैंक एनपीए जैसे जबरदस्त संकट का सामना कर रहे हैं। इस पूर्वव्यापी धारणाओं के कारण बैंक लघु उद्यमों को

ऋण देने से बचते हैं, इसके बावजूद यह उनके लिए कानूनी बाधक है कि वे लघु उद्यमों को ऋण में वरीयता दिखाएं। इसके अतिरिक्त लघु उद्यमों को उच्च ब्याज दरों पर ऋण लेना पड़ता है, जबकि बड़े उद्यमों को बिना परेशानी के, बहुत सस्ती दरों पर ऋण मिलता है और वह भी आसान शर्तों पर। वर्तमान सरकार ने माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रीफाइनंस एजेंसी (मुद्रा) स्टार्ट अप स्कीम इत्यादि के माध्यम से लघु और अति लघु उद्यमों का मार्ग सुगम बनाने का प्रयास किया है। अब केवल मुद्रा योजना के अंतर्गत 3.9 लाख करोड़ रुपये का कुल ऋण संचित किया गया है। इसके बाद मुद्रा ऋण के 9.3 करोड़ लाभार्थियों ने न केवल खुद स्वरोजगार चालू किया है बल्कि रोजगार सृजन भी किया है।

भारी आयात और डॉपिंग पर प्रतिबंध: हालांकि, विदेशी व्यापार आधुनिक काल में एक सामान्य घटना है लेकिन यह लघु उद्योगों के लिए संकट का बायस है। इसका कारण कुछ विदेशी देशों, विशेष रूप से चीन द्वारा की जाने वाली डॉपिंग है। केंद्र सरकार ने अब बड़े पैमाने पर एंटी डॉपिंग शुल्क लगाया है। राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में, तत्कालीन वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने कहा था कि चीन से आयात किए गए 93 उत्पादों पर एंटी डॉपिंग शुल्क लागू है। इसके अतिरिक्त एंटी डॉपिंग एंड एलीइड ड्यूटी के महानिदेशालय ने चीन से आयात के 40 मामलों में पहल की है। वर्ष 2016-17 में कुछ वस्तुओं पर एंटी डॉपिंग शुल्क लगाने के वांछनीय परिणाम मिले। चूंकि चीन की अनेक वस्तुओं पर एंटी डॉपिंग शुल्क लगाया जा रहा है इसलिए यह उम्मीद की जा रही है कि चालू वर्ष में चीन से आयात में गिरावट होगी। इससे न केवल घरेलू उद्योग को राहत मिलेगी, बल्कि चीन के साथ व्यापार घाटा भी कम होने की संभावना है।

सरकारी खरीद में वरीयता: लघु उद्यमों को संरक्षण और बढ़ावा देने के लिए ऐसी व्यापक और स्पष्ट सरकारी नीति थी कि एसएसआई से खरीद को वरीयता दी जाएगी। लेकिन बदलते दौर में यह वरीयता समाप्त या कम कर दी गई। हाल ही में सरकार ने जनरल फाइनेंशियल नियम (जीएफआर) बनाकर एक नई खरीद नीति लागू की है। जीएफआर के नियम 153 में कहा गया है: “50 लाख रुपये और उससे कम मूल्य के माल की खरीद में, और जहां नोडल मंत्रालय यह निर्धारित करता है कि पर्याप्त स्थानीय क्षमता और स्थानीय प्रतियोगिता है, केवल स्थानीय आपूर्तिकर्ता ही पात्र होंगे। 50 लाख रुपये और उससे अधिक मूल्य की खरीद के लिए (या जहां अपर्याप्त स्थानीय क्षमता/प्रतियोगिता है)। यदि न्यूनतम बोली गैर-स्थानीय आपूर्तिकर्ता की नहीं है, तो निम्नतम लागत वाले स्थानीय आपूर्तिकर्ता, जो न्यूनतम बोली के 20 प्रतिशत के अंतर के भीतर है, को निम्नतम बोली से मेल खाने का अवसर दिया जाएगा।” उम्मीद की जाती है कि घरेलू माल की खरीद को वरीयता देने से घरेलू उद्योग को सामान्य रूप से और लघु स्तरीय उद्योगों को प्रोत्साहन मिलेगा।

इंस्पेक्टर राज की समाप्ति: एसएसआई पर 40 से अधिक कानून लागू हैं और 50 से ज्यादा निरीक्षक उनके कारखानों का दौरा करते हैं। उनमें से कई में एसएसआई को दंडित करने के लिए व्यापक शक्तियां हैं। इन खतरों के साथ एसएसआई के लिए उत्पादन, विपणन और प्रौद्योगिकी के उन्नयन जैसे मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल होता है। कई ऐसे कानून हैं जो आधुनिक समय में उपयोगिता खो चुके हैं और कई सामान्य रूप से अर्थव्यवस्था और विशेषरूप से उद्योग के स्वस्थ कामकाज में बाधक हैं। इस त्रासदी को समाप्त करने की सख्त आवश्यकता है। हालांकि अर्थव्यवस्था के सुचारू रूप से कार्य करने के लिए वर्तमान सरकार ने कुछ बेमानी कानूनों को निरस्त करने का काम शुरू कर दिया है। अब तक 1200 अधिनियम रद्द किए गए हैं और 1824 अधिनियमों को निरस्त करने के लिए चिन्हित कर लिया गया है। नए उद्यमियों की सुविधा हेतु सभी प्रकार की मंजूरी के लिए एकल खिडकी की आवश्यकता है। कुछ राज्यों ने इस प्रक्रिया को शुरू किया है। जैसे ही अधिक से अधिक राज्य सरकारें ऑनलाइन होंगी, इस प्रक्रिया में तेजी आएगी। स्टार्टअप के लिए नई पहल के तहत, ऑनलाइन अनुमतियां पहले ही दी जा चुकी हैं।

बुनियादी ढांचे का निर्माण: एक दुर्गम क्षेत्र में लघु उद्यमों को शुरू करना और चलाना लगभग असंभव है। वे न तो रेल या सड़क से जुड़े हैं, न ही वहां ऊर्जा का विश्वसनीय स्रोत है। बड़े और विकसित स्थानों में भी बिजली की आपूर्ति एक बड़ा मुद्दा है। कई स्थानों पर बड़े पैमाने पर जनरेटर का उपयोग किया जाता है। इससे लागत बढ़ती है और प्रदूषण भी होता है। जनरेटर वाली इकाईयों का संबंधित विभागों के निरीक्षकों द्वारा शोषण भी किया जाता है। हमें रेल, सड़क, बिजली, कौशल विकास, बाजार (ई-पोर्टल्स सहित) सहित विभिन्न प्रकार के बुनियादी ढांचे को विकसित करने की जरूरत है। गांवों का सार्वभौमिक विद्युतीकरण, सौर ऊर्जा को बढ़ावा, वर्तमान सरकार द्वारा सड़कों का तेजी से निर्माण, यह सब लघु और अति लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए ही किया जा रहा है, खासतौर से ग्रामीण इलाकों में। सरकार द्वारा ई-प्रोक्योरमेंट को भी शुरू किया गया है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वभाव से भारतीय लोग उद्यमी, मेहनती और उत्साही हैं। उन्हें उद्यमिता विकास के लिए अनुकूल वातावरण की आवश्यकता है। यह प्रमुख रूप से सरकार का काम है। सरकार को अच्छे कानून बनाने पड़ते हैं, वातावरण को अनुकूल बनाना पड़ता है। भौतिक अवसंरचना को छोड़कर इसके लिए बहुत ज्यादा बजट की आवश्यकता नहीं होती है। बुनियादी ढांचे को भी सार्वजनिक निजी साझेदारी से विकसित किया जा सकता है। हाल के वर्षों में सुधार के बावजूद व्यापार में सहजता के मामले में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारी रैंकिंग अब भी 130 है। सरकार द्वारा बहुत कुछ किया जा चुका है और अभी बहुत अधिक की उम्मीद है।

संपादक

इस अंक में

सामाजिक न्याय की परिधि में निम्न पिछड़ी जातियों की स्थिति—आले नवी	1
हड़प्पा कालीन प्रमुख नगर: एक ऐतिहासिक अध्ययन—डॉ० मो० मंजर अली	7
“राजनीतिक यथार्थवाद और व्यवहारवाद”—डॉ० आलोक कुमार	13
“भारत-नेपाल सम्बन्ध तथा नरेन्द्र मोदी सरकार की वैदेशिक नीति व कूटनीति: एक अध्ययन”—डॉ० अमिताभ त्रिवेदी	17
नारी सशक्तिकरण और महात्मा गाँधी—अनिल शर्मा	22
“भारत में लोक सभा: पृष्ठभूमि, संरचना और कार्य”—आशुतोष सिंह जेलियाँग	27
“संसद तथा राज्य विधानमंडल के द्वितीय सदनों का तुलनात्मक अध्ययन”—डॉ० अशोक कुमार	33
प्रेमचंद की रचनाओं में राष्ट्रीय भावना—डॉ० शैल कुमारी वर्मा	40
भारतीय दर्शन में प्राकृतिक और दार्शनिक शिक्षा के आधार—डॉ० उदय कुमार शर्मा	44
जैन दर्शन में आचार मीमांसीय अनुशीलन—डॉ० राकेश कुमार	
“विश्व स्वास्थ्य संगठन की संरचना एवं कार्य: एक सामान्य अवलोकन—डॉ० कुमारी सुनीता	55
“दिनकर की कविता: मार्क्सवाद तथा गांधीवाद का द्वंद”—डॉ० संजय कुमार सिंह	59
बिहार के कामकाजी महिलाओं की पारिवारिक समस्याएँ: शिक्षण सेवा के संदर्भ में—डॉ० स्नेह लता	67
“दक्षिण और उत्तर बिहार की प्रादेशिक विषमताएँ: तुलनात्मक और भौगोलिक विश्लेषण—डॉ० राघवेंद्र प्रसाद सिन्हा	72
“स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक पृथक्करण एवं उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन”—अजय कुमार यादव; डॉ० आशाराम	76
चिड़वा तहसील में सिंचित क्षेत्र के स्थानिक वितरण का अध्ययन—डॉ० संजीव कुमार; डॉ० अश्वनी आर्य	82
समकालीन कहानियों में राजनीतिक चेतना—डॉ० विनय कुमार	89
सामाजिक नियंत्रण: अर्थ, प्रकार और प्रतिकूल प्रभाव—डॉ० राम बिनोद	92
भारत में अंतर्राष्ट्रीय चेतना का विकास—डॉ० राज भूषण उपाध्याय	97
“शहरी जीवन की गुणवत्ता विशेषतः पटना के संदर्भ में”—डॉ० विजय मिस्त्री	101
बौद्ध साहित्य में बुद्ध कालीन समाज—डॉ० शिवजी सिंह	106
पंचायत भारतीय शिक्षा संस्कृति की संवाहक और सभ्यता का अंग—डॉ० सुमन्त कुमार	110
इतिहास का पारस स्पर्श: चंपारण का गांधी—डॉ० गुड्डी कुमारी	117
18वीं और 19वीं शताब्दी में भारत में नारी जागरण के प्रयास—डॉ० पूर्णिमा कुमारी	121
नवादा जिला में पर्यटन की संभावनाएँ: एक भौगोलिक विश्लेषण—अमर कुमार	127
बिहार के हाईस्कूल के छात्रों के व्यक्तित्व की उनके लिंग के संबंध में गतिशीलता: एक तुलना—अदनान अहमद	135
आधुनिक समय में एकल परिवार की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण का अध्ययन—डॉ० अरूणा कुमारी	138
स्त्री आंदोलन और प्रेमचंद—डॉ० बिंधी कुमारी	141
स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की महिलाएँ—डॉ० बिपिन कुमार	145
भीष्म साहनी के साहित्य में नारी-चेतना : राष्ट्रीय पक्ष—मनकी रानी; डॉ० निरुपमा हर्षवर्धन	148
स्वतंत्रता आंदोलन में सूरज नारायण सिंह का योगदान—डॉ० मनोरंजन कुमार	153

दृष्टिकोण

बिहार में नील उद्योग एवं चम्पारण सत्याग्रह—डॉ० अमरजी कुमार	157
वैश्वीकरण के युग में मजदूर और किसान—डॉ० राकेश कुमार पासवान	162
मुगलकालीन प्रशासनिक व्यवस्था—डॉ० संजय कुमार आजाद	166
हिन्दू पुनरूत्थानवाद की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय जागरण (उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी)—डॉ० चन्दन कुमार	171
मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य में कार्ल मार्क्स का विचार—डॉ० महेन्द्र पासवान	177
लैंगिक असमानता: समस्या एवं समाधान (संवैधानिक, वैधानिक एवं अन्य प्रयास)—राखी प्रजापत	183
भारतीय राजनीति में दलीय व्यवस्था का विकास—डॉ० मो० जोहा सिद्दीकी	196
रामकृष्ण मिशन के सामाजिक एवं धार्मिक संदर्भ—डॉ० रिकु कुमारी	201
जननायक कर्पूरी ठाकुर: एक परिचय—डॉ० सुनीत कुमार	207
औद्योगिक नगरीय संरचना एवं बिहार के जनजातीय समुदाय: एक अध्ययन—डॉ० प्रियंका कुमारी	211
भारतीय राजनीति में मतदान व्यवहार: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—अवधेश कुमार सिंह	215
“स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक पृथक्करण एवं उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन”—अजय कुमार यादव; डॉ० आशाराम	219
भारत और नेपाल का सम्बन्ध एवं मधेशी समस्या का अवलोकन—संध्या कुमारी	225
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और राष्ट्रवाद: एक अध्ययन—डॉ० पंकज कुमार राय; प्रीति रानी	228
भारत में सांप्रदायिक राजनीति बनाम सेकुलरवाद का विमर्श: एक अवलोकन—अमृता कुमारी	233
गरीब महिलाएँ: लघु आवश्यकता, लघु ऋण एवं कुटीर उद्योग—डॉ० मणि भूषण कुमार	236
आरक्षण नीति की उपलब्धियाँ और परिणाम—विकास कुमार	241
पंडित दीन दयाल का एकात्ममानवतावाद: एक दार्शनिक विवेचन—डॉ० शैलेन्द्र कुमार	245
बिहार में क्षेत्रीय विकासका: (स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण)—अल्पना कुमारी	248
भारतीय राजनीति में दबाव समूह की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—वीभेष आनंद	255
बिहार में प्रथम कांग्रेसी मंत्रिमंडल (1937- 38) का ऐतिहासिक विश्लेषण—डॉ० अमित कुमार	258
राजा राममोहन राय के धार्मिक दृष्टिकोण का मूल्यांकन—डॉ० अरुण कुमार पंडित	263
डॉ० राम मनोहर लोहिया के आर्थिक चिंतन का विवेचन—डॉ० रणधीर कुमार राणा	267
सोशलमीडिया, शिक्षा, रोजगार एवं राजनीति—वर्षा रानी	271
लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान, कल्याणकारी योजना—डॉ० रिकी कुमारी	275
भारतीय संविधान में स्वतंत्रता के अधिकार वाद एवं विवाद—सुमित कुमार सिंह	280
ग्रामीण अर्थव्यवस्था में जैव- विविधता एवं पशुधन क्षेत्र की भूमिका एवं रोजगार के अवसर—मुकेश कुमार	287
भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में दरभंगा के किसानों का योगदान—डॉ० पुष्पा कुमारी	291
राष्ट्रीय आंदोलन में बिहार के दरभंगा जिला में महात्मा गाँधी की यात्राएँ: एक अध्ययन—मो. जमील हसन अंसारी	295
दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल और बिहार—सुमित कुमार	301
भारतीय संस्कृत साहित्य में मानवाधिकार का इतिहास—डॉ० विकास कुमार	305
भारतीय राजनीति एवं कश्मीर मुद्दा: अनुच्छेद 370 के सन्दर्भ में—अमोद कुमार दास	309
बिहार में चम्पारण आन्दोलन: एक समीक्षात्मक अध्ययन—नीरज कुमार	316
भारतीय लोकतंत्र एवं दबाव समूह: एक समीक्षात्मक अध्ययन—डॉ० प्रमोद कुमार राम	321
भारतीय संघवाद का उभरता स्वरूप: केन्द्रीय संघवाद से वास्तविक संघवाद की ओर—डॉ. धनंजय झा	326
गृह विज्ञान को लेकर लोगों के भ्रम की स्थिति—श्रीमती संगीतापुरी	330
नई कहानी: संवेदना और शिल्प—डॉ. विनय कुमार	334

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध: संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चे के लिए प्रयास—डॉ. दीपक कुमार	337
आधुनिक समय में अस्थानिक गर्भावस्था बढ़ती समस्या एक अध्ययन—अर्पणा सिन्हा	342
भारत में ई - कामर्स की वर्तमान स्थिति—स्वाति शर्मा; डॉ० एस. आर. ठाकुर	346
आधुनिक भारत में शिक्षा का विकास (1757-1964)—डॉ० रवि शंकर	350
प्राचीन भारत के शिल्पी एवं व्यावसायिक जीवन में पशुओं का महत्त्व—डॉ० केशव कुमार रंजन	353
लघुवित्त के माध्यम से निर्धनतम् तक पहुँच एवं प्रभाव—डॉ० श्वेता	358
परिवार कल्याण कार्यक्रम पद्धति और मूल्यांकन—डॉ० शंकर पंडित	363
उत्तर बिहार में मखाना खेती की समस्याएं और संभावनाएँ—डॉ० राजेश कुमार सुमन	367
डॉ० राधाकृष्ण सहाय का नाट्य चिंतन और समाज—डॉ० चंदन कुमार	374
कविता विधामे वैधनाथ मिश्र' यात्रीक योगदान—प्रीति कुमारी	380
सार्क और भारत—शिप्रा भारती	383
भारत-रूस संबंध: सामरिक संबंधों का 21वीं शताब्दी के संदर्भ में एक अध्ययन—डॉ. रणबीर गुलिया; अमित कुमार	388
“छत्तीसगढ़ में लघुवनोपज संग्रहण एवम् सरगुजा जिले के वनोपज संग्राहक श्रमिकों का ऐतिहासिक विश्लेषण”—डॉ. घनश्याम दुबे; अभिषेक अग्रवाल	393
गुप्तोत्तर काल के पश्चात् शूद्रों की स्थिति : एक अध्ययन—मुकेश कुमार पासवान	399
मुजफ्फरपुर जनपद की बस्ती के स्थानिक वितरण में स्त्री/पुरुष साक्षरता का विवेचनात्मक अध्ययन—सुनील कुमार	403
रोहतास जिला में पत्थर उद्योग का पर्यावरण पर प्रभाव: एक भौगोलिक अध्ययन— डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	407
प्राचीन भारतीय इतिहास के साहित्यिक साधन—डॉ. रिकु कुमारी	411
वैदिक कालीन महिलाओं की स्थिति एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता—प्रज्ञा शिखा	417
महिलाओं के विरुद्ध अपराध एवं मानव अधिकार: एक समाजशास्त्रीय समीक्षा—डॉ. मोनी कुमारी	422
आधुनिक भारत एवं महिला राजनीति—डॉ. निखिल कुमार	427
वर्तमान समय में लोहिया दर्शन की प्रासंगिकता—डॉ० चन्दा कुमारी	429
बैंकिंग सेक्टर में सुधार—डॉ. कुमार सुधांशु	434
बिहार की महिलाओं का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान—डॉ० अर्चना कुमारी	439
परिवार के लिए उचित व पौष्टिक पोषण—डा० मंजू श्री	443
मध्यकालीन भारत के संदर्भ में जनसम्पर्क की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: एक अध्ययन—डॉ. उपेन्द्र कुमार	446
प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाओं के कृत्य संतोष एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन—योगेश कुमार पाल; डॉ० राजेश पालीवाल	454
जैनेन्द्र कुमार और भबेन्द्र नाथ शङ्कीया की बाल मनोविज्ञान की कहानियाँ: एक अवलोकन—डॉ. रीतामणि वैश्य; जयश्री काकति	460
नागार्जुन की कविता में जनपक्षधरता—डॉ० उमा देवी	467
भवभूति की नाट्यकला तथा शैलीगत वैशिष्ट्य: एक अनुशीलन—प्रो. प्रसून दत्त सिंह	472
भारत में महिला सशक्तिकरण की स्थिति—डॉ० कुमारी पूजा	477
‘यात्री’क चित्रामे प्रगतिवादी स्वर—गोपल कुमार	482
राजभाषा के रूप में हिन्दी: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—डॉ० प्रीति बैश्य	486
भारत में लैंगिक असमानता और कुपोषण—सुकन्या; डॉ० अंजु सिंह	491
जननायक कर्पूरी ठाकुर: एक परिचय—डॉ० सुनीत कुमार	495
अरुण कमल की कविताओं में शिल्प-विधान—सत्यनारायण कुमार	499

दृष्टिकोण

डिजिटल कला का मनोवैज्ञानिक प्रभाव—डॉ० संगीता कुमारी	507
हिंदी साहित्य पर महात्मा गांधी का प्रभाव—डॉ० अनीता	513
राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2019 का प्रारूप: समग्र विश्लेषण—अनुराग तिवारी	515
पेरिस शांति सम्मेलन का भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर प्रभाव—डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह	522
भारत में आर्थिक नियोजन एवं संघवाद पर उसका प्रभाव—डॉ. अनामिका ब्रजवंशी	526
भारत में वामपंथी आंदोलन एवं उनसे संबंधित प्रमुख घटनाएं—डॉ. अनंता कुमारी	532
चंपारण सत्याग्रह: भारत छोड़ो आंदोलन की पूर्वपीठिका द्वारा—डॉ. अरुण कुमार निराला	536
बिहार में सामाजिक आंदोलन: पृष्ठभूमि एवं परिप्रेक्ष्य द्वारा—डॉ. बिजेन्द्र कुमार सिंह	540
आधुनिक भारतीय इतिहास के संभावित स्रोत के रूप में वैज्ञानिक उपादान: एक अवलोकन—दिलीप कुमार	544
आधुनिक भारत में जातिवाद की पृष्ठभूमि: एक अध्ययन—डॉ. प्रज्ञा कुमारी	547
प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं शैक्षिक प्रकल्प—डॉ. संतोष कुमार	552
भारत में वैज्ञानिक विकास की ऐतिहासिक परम्परा: एक अध्ययन—डॉ. वेदवती	556
दलित एवं पिछड़ी जाति के किशोरों की व्यक्तित्व आवश्यकताओं का अध्ययन—डॉ० धनवीर प्रसाद	561
बिहार के निर्माण में महेश नारायण का योगदान—डॉ. हरिशंकर राय	565
भारतीय संस्कृति पर भूमंडलीकरण का प्रभाव—डॉ. पूर्णिमा आर	569
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का युवाओं पर प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण—प्रीती मौर्या	573
आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान: अमरपुर प्रखण्ड (बांका जिला) के विशेष संदर्भ में—अनुज कुमार	578
बौद्ध धर्म में नारी की स्थिति—कल्याणी कुमारी	583
कालिदास कृत मेघदूतम् में मेघ-यात्रा—विपुल कुमार	588
इतिहास एक विज्ञान है अथवा कला—चंचला कुमारी	592
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन—देवेन्द्र प्रताप सिंह	598
भारतीय समाज में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा—डॉ० बबीता कुमारी	604
आधुनिक भारत में सांप्रदायिकता को प्रभावित करने वाले तत्वों का ऐतिहासिक विश्लेषण—मो. इंतखाब हसन	609
गाँधी जी का ग्राम-स्वराज: एक अध्ययन—डॉ रंजीत पासवान	613
गुप्तकालीन सामाजिक स्थिति का मूल्यांकन—डॉ० सरिता कुमारी	618
आधुनिक बिहार के जनजातीय विद्रोह की स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका—श्याम मूर्ति भारती	624
बागवानी कृषि का विकास: बून्दी जिले का एक अध्ययन—डॉ० नंदकिशोर जेतवाल	629
“माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन”—डॉ. रतन कुमार भारद्वाज; प्रभुदयाल	634
सारण जिले में जनसंख्या वृद्धि एवं जनसंख्या वितरण का प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन—डॉ० पिकी कुमारी	639
चम्पारण क्षेत्र में अनुसूचित जाति/जनजाति का आर्थिक क्रियाकलाप : एक भौगोलिक विश्लेषण—अम्बरीष कुमार	650
भीष्म साहनी का व्यक्तित्व और उनका जीवन—दर्शन—डॉ० आमोद कुमार	656
क्रांतिकारी आंतकवादी आन्दोलन: एक सर्वेक्षण—अरविन्द कुमार सिंह	658
आचार्य नरेन्द्र देव का सामाजिक, आर्थिक एवं दार्शनिक चिंतन—डॉ० रवीन्द्र कुमार राय	663
भारत में नक्सवादी आन्दोलन: एक विश्लेषण—डॉ कलानंद मंडल	667
ऑनलाइन स्टडी और आज का परिवेश—जनमेजय मिश्र; कृष्ण कुमार पाण्डेय	671

“माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का आध्यात्मिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन”-दीपक कुमार चौबे-डॉ. पार्वती यादव	676
मनोभाषाविज्ञान: अवधारणा एवं स्वरूप-डॉ. वंदना शर्मा; डॉ० गोविंद सिंह	680
बून्दी जिले में बागाती कृषि : अमरूद की खेती का एक विवेचन-डॉ० नंदकिशोर जेतवाल	683
भारत में राज्यपालों की भूमिका (1967 ई. के बाद)-डॉ० गुंजन कुमार	688
20वीं शताब्दी में बिहार के किसानों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति: एक अध्ययन-मो० शाहनवाज आलम	692
स्वतंत्र भारत में महिला आंदोलन का स्वरूप: एक अध्ययन-मृदुला कुमारी	696
काशी नगरी का गौरव देववाणी संस्कृत की आधुनिक परिप्रेक्ष्य एवं उच्च शिक्षा में उपयोगिता-कृष्ण कुमार पाण्डेय	701
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की ई-शासन सेवाओं का अध्ययन-प्रदीप	705
समकालीन कविता में स्त्री-संवेदना का संदर्भ-जैनेन्द्र चौहान	716
धर्म एवं विज्ञान का समन्वय-डॉ रुचि कुमारी	719
न्याय भाषा-दर्शन में वाक्यार्थ विचार-डॉ नागेन्द्र तिवारी	723
भारतीय भाषा दर्शन में शब्दार्थ स्वरूप विचार-डॉ. विकास कुमार	727
समकालीन कथा साहित्य में दलित विमर्ष-डॉ० चंदन कुमार	731
सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा : एक अध्ययन-डा० अजय कुमार सिंह	733
योगवासिष्ठ में अद्वैतवाद-डॉ. अमृत कौशल	738
बिहार की कृषि का वित्तीय क्षेत्र के लिए चुनौतियाँ:वरीयता क्षेत्र और बैंकिंग क्षेत्र का विशेष अध्ययन-मृत्युंजय कुमार मिश्र	745
गाँधी के सर्वोदय की अवधारणा में नारी-डॉ० अविनाश कुमार	755
मध्यकालीन मिथिला का सामाजिक जीवन-चंदन कुमारी	761
दिल्ली सल्तनत की स्थापना: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन-डॉ० मो० इन्तेखाब आलम	766
इच्छामृत्यु वरदान या श्राप: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन-सिकन्दर अन्सारी	770
नेपाली के गीतों में उनका व्यक्तित्व-डॉ० आर्य सिन्धु	774
1900 ई. से 1976 ई.के बीच उत्तर बिहार में उद्योगों की स्थिति -डॉ० मनोज कुमार	778
मनरेगा एवं ग्रामीण महिलाएं (उत्तराखण्ड के कुमाऊं मंडल के विशेष सन्दर्भ में)-डॉ. निधि राणा	782
नई शिक्षा नीति की आवश्यकताएं-अजीत कुमार सिंह	787
समस्तीपुर जिला में लिंगानुपात का बदलता स्वरूप-नीरज कुमार; डॉ. डी.के. चौधरी	790
सती प्रथा: मुगलकालीन इतिहासकारों का दृष्टिकोण-अनुभा सिंह-डॉ. राजीव नयन	799
मानवेन्द्र नाथ राय के दर्शन में मानव प्रकृति की विवेचना-पूनम कुमारी	801
अलवर रियासत की महिलाओं की भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान-राहुल कुमार मीणा	804
कर्णाटककालीन मिथिला का समाज-डॉ० राकेश कुमार	808
गरीबी उन्मूलन के लिए कार्य-योजना: एक अध्ययन-राकेश कुमार	816
आधुनिक भारत की राजनीति में धर्म का महत्त्व-डॉ० राम विनोद कामत	820
मानवाधिकार और हमारा समाज-डॉ० राम जानकी राय	827
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में प्रभावों तुलनात्मक अध्ययन करना-डॉ० लोकपति त्रिपाठी	830
किन्नरों की संस्कृति व सामाजिक स्थिति का अध्ययन (बिलासपुर जिले के चांटीडीह के विशेष सन्दर्भ में) -पूनम तिवारी; डॉ. ऋचा यादव	838

दृष्टिकोण

भाषा शिक्षण के क्षेत्र में शिक्षक की अपेक्षाएँ—डॉ. राकेश कटारा; सुनिता जांगिड़	851
कृषि के क्षेत्रीय विकास में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग एवं वैज्ञानिकता—राम रतन मीना	857
नैषधीयचरितम् महाकाव्य में प्रयुक्त कुछ दुर्घट क्रियापदों का विवेचन—धारा	864
भारतीय पत्रकारिता में नैतिकता: एक मूल्यात्मक अध्ययन—डॉ. शशी भुषण कुमार	872
विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्व—शालू तिवारी	877
न्याय-वैशेषिक के परमाणुवाद से अन्य परमाणुवादी सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन—डॉ० ओम प्रकाश प्रभाकर	880
राष्ट्रीय निर्माण में महिलाओं की भूमिका—सोनी त्रिपाठी	884
संवैधानिक परिप्रेक्ष्य में मनरेगा की दशा एवं दिशा—डॉ. रेणु कुमारी	888
लघु वनोपज संग्रहण से आदिवासियों के आर्थिक विकास पर प्रभाव (कोरबा वन क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)—प्रिंस कुमार मिश्रा; प्रो. प्रभाकर पाण्डेय	892
बौद्धकालीन समाज में स्त्री प्रश्न: एक नारीवादी अध्ययन—डॉ. अनामिका कुमारी	899
भ्रूण हत्या—एक समाजिक अभिशाप—अरूण कुमार	903
छत्तीसगढ़ में कोयला उत्खनन एवम् सरगुजा क्षेत्र की कोरिया रियासत के कोयला खान श्रमिकों का ऐतिहासिक विवेचन—डॉ. घनश्याम दुबे; अभिषेक अग्रवाल	910
रतनपुर के प्राचीन धरोहर एवं धार्मिक अंचल का अध्ययन—डॉ. रामरतन साहू; अंजली	916
“छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के आर्थिक विकास पर मनरेगा योजना का प्रभाव—एक अध्ययन” (दक्षिण बस्तर दंतेवाड़ा जिले के विशेष संदर्भ में)—धारम दास टण्डन; प्रो. प्रभाकर पाण्डेय	921
मीडिया की दुनिया और नागरिक पत्रकारिता—डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा	926
हरविजय महाकाव्य में चित्रित सामाजिक मान्यताएँ : एक अध्ययन—डॉ. रेनू शुक्ला	930
शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन—राहुल कुमार तिवारी	944
राजस्थान में अनुसूचित जाति में सामाजिक गतिशीलता: जालोर जिले के मेघवाल समुदाय का अध्ययन—मोहनलाल गेहलोत	949
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनर विद्यार्थियों के परिवारिक वातावरण का उनके नैतिक मूल्यों में सम्बन्ध का अध्ययन—शालू तिवारी	952
बौद्ध धर्म के इतिहास में “धर्म-चक्र प्रवर्तन”—डॉ. संजय कुमार	957
पर्यावरण एवं संपोषणीय विकास—लक्ष्मी कुमारी	963
अमेरिकी राष्ट्रपति और ब्रिटिश सम्राट तथा प्रधानमंत्री : एक तुलनात्मक अध्ययन—डॉ. प्रभाकर	967
हिन्दी साहित्य और सिनेमा—डॉ. संतोश कुमार	971
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में पुस्तकालय की भूमिका—डॉ. दिनेश कुमार	976
बिहार में राष्ट्रीय चेतना का विकास और सांप्रदायिक सद्भाव—डॉ. रूमा कुमारी	981
राजनीतिक लामबंदी का दौर एवं सामाजिक परिवर्तन : संदर्भ एवं मुद्दे—अशोक कुमार शर्मा	986
मौर्यकालीन साम्राज्य के सांस्कृतिक आयाम—डॉ. मनीष कुमार	991
नशे की लत: चिकित्सा और थेरेपी के लाभ—डॉ. मनोज कुमार सिंह	995
पर्यावरणीय मनोविज्ञान : पर्यावरण और मानव व्यवहार में अंतर्संबंध—डॉ. सैयद फरहत	999
भारतीय राजनीति में साम्प्रदायिकता और धर्म—डॉ. राजेश कुमार पांडेय	1002
भारतीय राजनीति: आधुनिकता और परम्परा—प्रियरंजन	1007
संन्यासी विद्रोह—डॉ. विपेंद्र विक्रम	1012

विनोबा भावे की जीवनी व उपलब्धियाँ—डॉ. सुधीर कुमार सिंह	1014
बिहार में राष्ट्रीय आंदोलन के जनक राजा नारायण सिंह—डॉ. सुनीता कुमारी	1017
आधुनिक मैथिली साहित्यमे हंसराजक अवदान—कुमकुम कुमारी	1020
ब्रिटिश राज में भारतीय समाचार पत्रों का विकास और भूमिका—कुमारी रीना	1023
साहित्य के प्रसार में अनुवाद की भूमिका—डॉ. स्वाती ठाकुर	1029
शोध-ललित कुमार सिंह नटवर : जीवनी और उनकी कविताओं में होली वर्णन—डॉ. कुमारी मीना सिंह	1032
शोध-ललित कुमार सिंह नटवर: व्यक्तित्व और कविताओं में व्यक्त विचार—डॉ. मनोज कुमार सिंह	1036
स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान मुजफ्फरपुर जिला में सुनीति देवी की गतिविधियाँ एवं उनका योगदान—डॉ. अंगुरी बेगम	1042
वज्जिकांचल की स्थानीय खेल संस्कृति: एक अध्ययन—डॉ. संतोष कुमार	1049
राष्ट्रभाषा की अवधारणा एवं इस रूप में हिन्दी का प्रश्न : एक अध्ययन—डॉ. सुधीर कुमार	1056
समकालीनता की अवधारणा—अरमान आनंद	1060
दलित आंदोलन और उसकी चुनौतियाँ—चन्द्रमौली कुमार	1064
पंचायतीराज एवं 73वें संविधान संशोधन : बदलाव की क्रांति का आगाज—डॉ. विकास कुमार	1068
दूसरा सप्तक: एक सामान्य अध्ययन—ध्रुव कुमार शुक्ल	1072
इतिहास की अवधारणा, स्वरूप, विषय क्षेत्र, अध्ययन का महत्व—डॉ. मंजुली कुमारी	1080
भारत में जमींदारी प्रथा का इतिहास—बासुदेव शाह	1082
संस्कृत नाट्य परम्परा में ऐतिहासिक और राजनीतिक नाटक—डॉ. इंदु कुमारी	1086
दिनकर की संस्मरणधर्मी कविताओं का अध्ययन—डॉ. महेश कुमार	1090
महाकवि जयशंकर प्रसाद की कविताओं में प्रतीक योजना—डॉ. उपेन्द्र प्रसाद	1093
स्वतंत्र काल में बिहार के राजनितिक विकास में अनुग्रह नारायण सिंह की भूमिका—बिपिन कुमार सिंह	1097
भारत में जनवितरण प्रणाली में कार्यान्वयन तंत्र—मनीष कुमार	1099
भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की सफलता का प्रमुख आधार: एक राजनीतिक विश्लेषण—डॉ. रुपक कुमार	1102
आर्थिक विकास: एक आलोचनात्मक विश्लेषण—डॉ. राकेश कुमार	1105
वृद्धावस्था में जरूरी पोषक तत्व और आहार आयोजन—डॉ. प्रज्ञा कुमारी	1110
भवभूति के नाटकों में चित्रित नारी जीवन—डॉ. शोभा रानी सहाय	1115
बिहार में नगर पालिका-कर्मिकी पद्धति : रिविलगंज नगर पालिका का दृष्टांतमक अध्ययन—डॉ. विद्या भूषण श्रीवास्तव	1118
शीर्षक: महावीर चरित : एक काव्य शास्त्रीय समीक्षा—डॉ. अंजलि सहाय	1120
भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर समाजवादी विचारों का प्रभाव : “गाँधी, नेहरु, जे.पी., कृपलानी एवं लोहिया के विशेष सन्दर्भ में (1921-1947)—डॉ. अलका सहाय	1123
बिहार के रोहतास जिले का आर्थिक और भौगोलिक अध्ययन—डॉ. मुकेश कुमार	1127
कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व—डॉ. बिमलेश कुमार पाण्डेय	1130
इतिहास के अध्ययन में सहायक विज्ञान का उपयोग—डॉ. पंकज कुमार पांडेय	1133
नालंदा महाविहार से संबद्ध प्राचीन गाँवों की खोज—डॉ. रवि शंकर गुप्ता	1136
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना तथा इतिहास—गिरीश कुमार राय	1143

दृष्टिकोण

मौर्यकालीन बिहार में कृषि और कृषि प्रबन्धन का विश्लेषणात्मक अध्ययन—डॉ. नीता कुमारी; डॉ. रंजीत कुमार राय	1147
नक्सल आन्दोलन: कारण और समाधान—डॉ. गीतांजलि	1153
भारत में शिक्षा का इतिहास—डॉ. मनोज कुमार	1156
मुजफ्फरपुर जिला में महिलाओं की सामाजिक परिस्थिति एवं कामकाजी महिलाओं का उत्पीड़न—डॉ. रीना कुमारी	1160
गुप्तकाल में नारियों की स्थिति: आर्थिक पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में—डॉ. रेखा चौधरी	1163
स्वामी विवेकानंद: जाति-पुरोहितवाद से लड़ने वाले क्रांतिकारी—डॉ. संतोष कुमार राय	1168
नादयोग—डॉ० कामेश्वर कुमार	1173
भारतीय संगीत का ऐतिहासिक स्वरूप—डॉ. चन्देश्वर प्रसाद कुशवाहा	1176
शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत में आंतरिक संबंध—डॉ. सुरेन्द्र कुमार राम	1178
गांधी का राज्य—डॉ. सुनील कुमार	1181
हिंदी साहित्य में लोक जीवन का चित्रण—राकेश कुमार तिवारी	1185
औपनिवेशिक भारत में उभरते राज्य और औद्योगिकरण: एक अध्ययन—डॉ० कल्पना कुमारी	1187
आजादी बाद दलितोद्धार के लिए किये कार्यों का विश्लेषण—डॉ० शैलेन्द्र कुमार सिंह	1191
कोसी-क्षेत्र का बदलता यथार्थ और रेणु की कहानियाँ—डॉ. बेबी कुमारी	1197
भारतीय संघवाद का ऐतिहासिक विश्लेषण—डॉ. सुनील कुमार	1202
प्रेमचंद की गद्य विधाओं में दलित विमर्श—डॉ. अखिलेश कुमार सिंह	1210
बौद्ध-जैन धर्म में पर्यावरण चिंतन—डॉ. कुमारी स्मृति चन्द्र	1215
आरसी प्रसाद सिंह का काव्य सौंदर्य—विवेक चंद्र	1221
दलित समस्या पर : गाँधी और अम्बेडकर के बीच मतभेद के बिन्दु—डॉ. नरेन्द्र राज	1225
हरिकृष्ण प्रेमी के नाटकों में हिन्दी रंगचेतना का विकास—डॉ. राजगीर साहु	1230
बेनीपुरी के नाटकों की अभिनेयता—डॉ. पूनम कुमारी	1234
भारत छोड़ो आंदोलन एवं बिहार की भूमिका: एक संक्षिप्त अध्ययन—डॉ० संजीव कुमार	1239
बच्चों के शैशवाकालीन सामान्य बीमारियाँ एवं उसके उपचार—डॉ० अस्मिता सिंह	1243
बिहार में किसान आंदोलन के चरण एवं उसका सांगठनिक प्रतिरूप: एक अध्ययन—रजनीश कुमार	1248
भारत में दक्षिणपंथी राजनीति का उद्भव की पृष्ठभूमि एवं प्रभाव: एक अध्ययन—राकेश कुमार रंजन	1252
समकालीन कहानीकारों में भीष्म साहनी—सुशील कुमार मंडल	1257
उदय प्रकाश की कहानियों में नगरीय जीवन—सरस्वती पाण्डेय	1260
विद्यापति-पदावली में चित्रात्मकता—डॉ. शोभा कुमारी	1264
मैत्रेयी के उपन्यासों में सामाजिक चेतना—डॉ. कुमारी निश्चय	1268
भारत की विदेश नीति और सैन्य संघर्ष—डॉ. सुनील कुमार	1275
पश्चात्य संदर्भ में समाजवाद एवं साम्यवाद की व्याख्या—अंकिता कुमारी	1278
“भारत में मानवाधिकार के संवैधानिक प्रावधानों का अध्ययन”—दीपक कुमार दास	1282
किसान क्रेडिट कार्ड की कृषि विकास में भूमिका: कमालपुर (गया) के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन —डॉ० मनोज कुमार निराला	1287
ग्रामीण उद्योग: ग्रामीण विकास की एक आवश्यकता—डॉ. कृष्ण कुमार सिंह	1294
जीवन और लेखन : राजेन्द्र यादव—भोला प्रसाद यादव	1298
उच्च शिक्षा में अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की मूल्यों (सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य एवं धार्मिक मूल्य) का तुलनात्मक अध्ययन—अजय सिंह यादव; डॉ. आशाराम	1304

कौटिल्यकालीन न्याय प्रणाली: एक अध्ययन—शिव कुमार सिंह	1311
मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास : “आपका बंटी” (एक संक्षिप्त विवेचन)—डॉ. मनीषा मिश्रा	1316
भारत की स्वतंत्रता संग्राम में चंपारण सत्याग्रह का महत्व—उषा कुमारी	1318
उत्तरवैदिक काल (1000-600 ई० पू०) की भौगोलिक व राजनीतिक व्यवस्था—नूतन कुमारी	1320
प्रसाद की ध्रुवस्वामिनी : वर्तमान में भी प्रासंगिक—डॉ. कंचन गुप्ता	1326
बिहार में कृषि सांख्यिकी की उभरती प्रवृत्तियाँ: बिहार के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन—अमिता चन्दन	1329
नूर मोहम्मद के काव्य पर भारतीय सूफी चिंतन का प्रभाव—डॉ. प्रदीप कुमार सिंह	1334
खादी विकास और ग्रामोद्योग आयोग : ग्रामीण विकास में साझीदार—डॉ. नवीन कुमार	1339
दत्तवती महाकाव्यमें प्रकृति-चित्रण—दीपक कुमार पटेल	1343
जनसंख्या वृद्धि और मानव संसाधन विकास—अर्चना शंकर	1347
गंगा के मैदानों में जनसँख्या के कारकों की आर्थिक संरचना : एक अध्ययन—वंदना शंकर	1349
हिंदी नवजागरण के आर्थिक सवाल—अशोक कुमार यादव	1351
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ: समीक्षात्मक अध्ययन—कुमारी रीमा	1355
जग लाल चौधरी : एक संक्षिप्त परिचय—डॉ. नमिता कुमारी	1358
बौद्ध धर्म और प्राचीन भारतीय महिलाएं—डॉ. उमा पिथौरा	1360
राष्ट्रवाद और सामान्य जातीय या रक्त संबंध: एक विवेचन—डॉ० कुमार रंजीत	1363
श्रमिक आंदोलन के विभिन्न आयाम—डॉ० सत्येन्द्र कुमार श्रीवास्तव	1368
सातवाहनों का काल एवं प्रायद्वीप में राज्य निर्माण—श्रीमती अंजू कुमारी	1373
भारत में क्षेत्रवाद की राजनीति: एक मूल्यांकन—डॉ० सीता कुमारी	1377
समायोजन—सोनल कुमारी	1384
पर्यावरण को बचाने की कवायद—नरेन्द्र कुमार शर्मा	1389
जैन दर्शन—डॉ० सुमित्रा कुमारी	1394
भारत में किसान आन्दोलन का इतिहास—बिन्नी कुमारी	1398
भगवद्गीता में निहित दर्शन—डॉ० प्रमोद कुमार सिंह	1402
दलीय व्यवस्था के सिद्धांत—चंद्र विजय प्रकाश यादव	1406
अधीतकालीन अर्थ संयोजन (ई.पू. 600—ई.पू. 200 तक)—संतोष कुमार शर्मा	1411
फ्रायड और टैगोर की कामदृष्टि: एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण—डॉ० रूमा कुमारी सिन्हा	1419
मुगल साम्राज्य का पतन और मुहम्मदशाह—डॉ० मनोज सिंह यादव	1423